बर्बरीक से मिलने की सोची। बर्बरीक से भेंट होने पर पहले उन्होंने कई प्रकार की बातें की। फिर उनसे परिचय पूछा। बर्बरीक ने अपने बल पौरुष एवं दान शीलता का बखान किया। ब्राह्मण रूपधारी श्रीकृष्ण ने उनकी वीरता का प्रत्यक्ष परिचय देने के लिए कहा। बर्बरीक ने एक ही बाण से सारी सृष्टि को संहार करने का ओजस्वी स्वर गुंजायमान किया। ब्राह्मण ने असहमति जताते हुए वहीं स्थित एक पीपल के पेड़ के सभी पत्तों को एक ही बाण में बेंधकर दिखाने को कहा– जिस समय बर्बरीक ध्यान मग्न हो अनुसंधान करने लगे– उसी समय श्रीकृष्ण ने एक पत्ता तोड़ अपने पैर के नीचे दबा लिया। सोचा मैं स्वयं इस पत्ते की रक्षा करूँ देखूँ क्या होता है किन्तु बर्बरीक के बाण ने सभी पत्तों का छेदन कर डाला – श्रीकृष्ण द्वारा रक्षित पत्ता भी नहीं बच पाया। श्रीकृष्ण सारी बात समझ गए अब उन्होंने एक अद्‌भुत लीला रची जो सदैव अमर रहेगी।

श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से दान मांगा और उसका वचन ले लिया। वचन मिलने पर श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से उसके शीश को ही दान में मांग लिया। किशोर अचम्भित रह गया– यह क्या मांग लिया– किन्तु

श्री श्याम कथा

बड़े ही नम्र भाव में उन्होंने ब्राह्मण से विनती की ''प्रभु आपको मेरे शीश से क्या प्रयोजन, आप कौन हैं ? ब्राह्मण तो नहीं हो सकते। कृपा कर अपने को प्रगट कर शंका का निवारण करें। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें अपने रूप का दर्शन कराया और समझाया ''वत्स, महाभारत युद्ध के लिए एक वीर की बलि चाहिए तुम पाण्डव कुल के हो। अतः रक्षा के लिए तुम्हारा बलिदान सदैव याद किया जाएगा।'' बर्बरीक ने शीश दान से पहले युद्ध देखने की इच्छा प्रकट की– भगवान ने 'तथास्तु' कह कर वीर योद्धा को संतुष्ट किया। सारा ब्रह्माण्ड सुन्न हो गया– अब ऐसी घटना होने वाली थी जो न तो हुई और न आगे किसी भी युग में होगी। वीर ने अपने आराध्य देवी–देवताओं का वन्दन किया। माता को नमन किया और फिर कमर से कटार खींचकर एक ही वार में अपने शीश को धड़ से अलगकर श्रीकृष्ण को शीश दान कर डाला। श्रीकृष्ण ने तेजी से शीश को अपने हाथ में उठा लिया एवं अमृत से सींच कर अमर करते हुए एक टीले पर रखवा दिया। खाटू मन्दिर में आप जब जाएंगे आपको बाबा का नित नया रूप मिलेगा। किन्ही किन्ही को तो इस विग्रह में कई बदलाव नजर आते हैं। कभी मोटा तो कभी दुबला। कभी हंसता हुआ तो कभी ऐसा तेज भरा कि नजरें भी नहीं टिक पाती। प्रसंगवश आगे ये बात लिखने से रह नहीं जाए अतः यहीं लिख दिया।

प्रेमियों युद्ध शुरू हुआ– अमरत्व प्राप्त शीश पूरे युद्ध को देख रहा था– युद्ध के दौरान कई लीलाएँ घटती रहीं। धर्म और अधर्म की आँख मिचौली निरन्तर जारी थी– दृष्टा मौन हो सब देख रहा था। अन्ततः कौरवों का अन्त हुआ। पाण्डव विजयी हुए। विजय के मद ने मति बदल दी। सभी आत्म प्रशंसा में लग गए – मतान्तर

श्री श्याम कथा

होने पर श्रीकृष्ण के पास निर्णय के लिए पहुँचे। श्रीकृष्ण ने कहा, ''मैं तो स्वयं व्यस्त था आप में से किसने क्या पराक्रम दिखाया, देख नहीं सका। बर्बरीक के पास चलें वहीं निर्णय मिलेगा। अब तक बर्बरीक के शीश दान की कहानी पाण्डवों को नहीं मालुम हुई थी। भगवान श्रीकृष्ण के बर्बरीक से पाण्डवों के पराक्रम के बारे में पूछने पर – शीश ने उत्तर दिया ''प्रभु युद्ध में आपका सुदर्शन चक्र नाच रहा था और जगदम्बा खप्पर भर–भर लहू का पान कर रही थी मुझे तो ये लोग कहीं नजर नहीं आए– बर्बरीक के उत्तर को सुन सभी पाण्डवों की नजरें नीची हो गईं। मुस्करा रहे थे वासुदेव बर्बरीक से धर्मानुकूल निर्णय सुनकर। श्रीकृष्ण ने बर्बरीक का सभी से परिचय कराया। प्रेमियों, स्कन्धपुराण में बर्बरीक को भीम के पुत्र घटोतकच का पुत्र बतलाया गया है। जबकि कई जगह इन्हें भीम का पौत्र नहीं पुत्र माना गया है। मैं तो यह जानता हूँ ये मेरे आराध्य देव हैं– सकल